यात्रा : एक पावन तीर्थ की

—डॉ. देव कोठारी

लेखक—परिचय

डॉ. देव कोठारी का जन्म 27 अक्टूबर, 1941 को गोगुंदा जिला उदयपुर में हुआ। हिन्दी, प्राकृत और इतिहास विषय में स्नातकोत्तर एवं राजस्थानी में विद्या वाचस्पति की उपाधि प्राप्त की। आपकी रूचि प्राचीन साहित्य के हस्तलिखित ग्रंथों के अध्ययन की रही। कई शोध परक आलेख लिखकर प्राचीन तथ्यों को प्रकाश में लाए। नई कहानी की रचना प्रक्रिया एवं शिल्प विधान पर आपका लेखन उल्लेखनीय है। आप साहित्य संस्थान, उदयपुर में निदेशक पद पर रहे एवं राजस्थानी भाषा साहित्य एवं संस्कृति अकादमी, बीकानेर के अध्यक्ष भी रहे। महाराणा मेवाड फाउण्डेशन के प्रतिष्ठित महाराणा कुंभा पुरस्कार से आपको सम्मानित किया गया है।

पाठ—परिचय

प्रस्तुत यात्रावृत्त में लेखक ने अण्डमान निकोबार द्वीप समूह की स्वर्णिम स्मृतियों का रेखांकन किया हैं। पोर्ट ब्लेयर का प्राकृतिक सौंदर्य, रॉस द्वीप की ऐतिहासिकता, सेल्यूलर जेल की कहानी में भारतीय स्वतंत्रता संग्राम का चित्रमय वर्णन एवं लेखक की सूक्ष्म दृष्टि का सुन्दर वर्णन इसमें हुआ है। ऐतिहासिक तथ्यों के साथ भावपूर्ण चित्रण अनुपम है। यह यात्रावृत्त भारतीय स्वंतत्रता संग्राम के दृश्य को प्रस्तुत करता है, जहाँ मातृभूमि के लिये स्वाधीनता सेनानियों ने देश रक्षार्थ किस प्रकार संघर्ष किया?

****

बाल्यकाल में मॉ भारती को गुलामी की जंजीरों में जकड़े हुए देखा था। स्वाधीनता संग्राम एवं 15 अगस्त, 1947 को उन जंजीरों से मुक्त होते हुये भारत के स्वर्णिम प्रभात के दर्शन भी किये थे। उन्हीं दिनों वीर सावरकर के स्वातंत्र्य संघर्ष के किस्से आये दिन सुनने को मिलते थे। अण्डमान द्वीप में पोर्ट ब्लेयर स्थित सेल्यूलर जेल में सावरकर तथा अन्य स्वाधीनता सेनानियों को दी जाने वाली यातनाओं की लोमहर्षक धटनाएँ सुन कर दिल दहल उठता था। मन में तब स्वतः स्फूर्त जिज्ञासा उठती थी कि यदि जीवन में कभी अवसर मिला तो स्वतंत्रता सेनानियों के इस पावन तीर्थ सेल्यूलर जेल की माटी का साक्षात वन्दन अवश्य करूंगा तथा यहॉ की माटी से तिलक कर उन स्वाधीनता के पुजारियों के प्रति नमन कर भावभीनी श्रद्धा अवश्य अर्पित करूंगा।

जीवन के सात दशक पार करने तक यह पुनीत अवसर नसीब नहीं हो सका, लेकिन आठवें दशक में प्रवेश करते ही महाराणा प्रताप वरिष्ठ नागरिक संस्थान, उदयपुर के प्रयासों से बचपन में उत्पन्न इच्छा को पूर्ण करने का सौभाग्य प्राप्त हुआ तथा अण्डमान—निकोबार केरल व कन्याकुमारी की ग्यारह दिवसीय यात्रा का थामस कूक यात्रा कं. के माध्यम से कार्यक्रम बना। इस यात्रा में कुल 64 सदस्य थे, जिनमें 25 दम्पति 8 एकाकी पुरूष, 5 एकाकी महिलाएँ व एक बालक था। वरिष्ठ नागरिकों का यह दल 1 अप्रेल, 2011

सायं 9.30 बजे टाउन हाल उदयपुर से दो बसों द्वारा अहमदाबाद के लिये रवाना हुआ। बसें 2 अप्रेल को प्रातः 3.00 बजे अहमदाबाद एअरपोर्ट पहुंची और प्रातः 5.50 बजे किंग फिशर वायुयान चैन्नई के लिये उडा। लगभग 2 घंटे 20 मिनट तक आकाश मार्ग की अनुभूतियों का आनन्द लेते हुये प्रातः 8.10 बजे पर चेन्नई एअरपोर्ट पहुंचें। यहॉ एअरपोर्ट के बाहर दो वातानुकूलित बसें तैयार खडी थी। इन बसों से हमें दो होटलों यथा–होटल डी.सी. इन तथा होटल डी.सी. मनोर में ठहराया गया। यहां से ब्रेकफास्ट करके पहले हम चेन्नई के प्रसिद्ध मेरिना बीच पर पहुंचे। यहां हमने हिन्द महासागर की विशालता को देखा। पानी की लहरों का समुद्र के पानी में उतर कर आनन्द लिया, तत्पश्चात चेन्नई म्यूजियम के लिये रवाना हुए तथा चेन्नई म्यूजियम की पुरातात्विक, ऐतिहासिक व सांस्कृतिक धरोहर का साक्षात्कार कर दक्षिण भारत की भव्यता के दर्शन किये। दोपहर में पुनः अपने–अपने होटल में लौट आये तथा क्रिकेट के वर्ल्डकप के फाइनल मैच को टी वी पर देखा। भारत की जीत का जश्न होटल में बैठकर ही मनाया।

रात्रि विश्राम कर 03 अप्रेल को प्रातः 7.00 बजे चेन्नई एअरपोर्ट के लिये बसों से पुनः रवाना हुए तथा प्रातः 9.30 बजे चेन्नई से पोर्ट ब्लेयर के लिये उडे। चेन्नई से पोर्ट ब्लेयर की 1330 किलोमीटर की हवाई दूरी सम्पन्न कर लगभग 11.30 बजे पोर्ट ब्लेयर स्थित वीर सावरकर एअरपोर्ट पर वायुयान ने दस्तक दी। यहाँ से बसों द्वारा होटल TSG पहुॅचे। अपने–अपने कमरों में विश्राम के पश्चात् दोपहर का भोजन किया तथा भोजन के बाद मन में उमंग, उत्साह तथा जिज्ञासा से सराबोर हो पोर्ट ब्लेयर के भ्रमण के लिये रवाना हुए। मन में यह जानने कि प्रबल उत्कण्ठा थी कि अण्डमान निकोबार को भारत का कालापानी क्यों कहा जाता है?

सबसे पहले वाटर स्पोर्टस काम्पलेक्स (जल कीडा विहार परिसर) पहुंचे जल कीडा की दृष्टि से यह अपने आप में सम्पूर्ण भारत में अद्वितीय हैं समुद्री ज्वार और भाटे के समय यह परिसर पानी से अपने आप लबालब हो जाता है तथा फिर खाली भी हो जाता है। इस परिसर के अन्दर और खुले समुद्र में जल–क्रीडा करने की सुन्दर व्यवस्था है। स्थानीय पर्यटन विभाग जल–क्रीडा कम खर्च पर कराता है। इसके समीप ही स्थित 26 दिसम्बर 2004 को आई सुनामी की स्मृति में स्मारक भी बना हुआ है। इस स्मारक पर क्षण भर मौन धारण कर उन अनाम लोगों के प्रति श्रद्धांजलि भी अर्पित की जो इस सुनामी की भेंट चढ गये थे।

इस जल–क्रीडा परिसर के ठीक सामने रॉस द्वीप है। इस रॉस द्वीप का क्षेत्रफल केवल 0.8 वर्ग किलोमीटर है तथा इसका नामकरण डेनियल रॉस जो मरिन इंजीनियर था, के नाम से किया गया है। यहाँ पर पानी के बोट से दस मिनट में पहुँचा जा सकता है। जब रॉस द्वीप पर हम सब पहुँचे तो हमारा परिचय अनुराधा राव नाम की एक महिला गाइड से कराया गया। यह अधेड उम्र, छरहरे बदन एवं सांवले रंग की महिला स्वभाव से जोशीली एवं फर्राटेदारहिन्दी व अंग्रेजी में बात करने वाली थी। सबसे पहले इस अनुराधा राव ने हमें पार्टब्लेयर तथा रॉस द्वीप का परिचय कराया।

उसने बताया, यह पार्टब्लेयर एवं रॉस द्वीप अण्डमान–निकोबार द्वीप के हिस्से हैं। अण्डमान निकोबार द्वीप समूह का कुल क्षेत्रफल 8249 वर्ग किलोमीटर है, जिनमें कुल 572 छोटे–बडे द्वीप हैं इनमें से केवल 36 द्वीपों में ही आबादी हैं, शेष निर्जन हैं। अण्डमान द्वीप की लम्बाई 467 किलोमीटर और अधिकतम

चौडाई 52 किलोमीटर है। इसी तरह निकोबार द्वीप समूह की लम्बाई 259 किलोमीटर और अधिकतम चौड़ाई 58 किलोमीटर है। अण्डमान एवं निकोबार द्वीपों का सर्वप्रथम सर्वे लेफ्टिनेन्ट आर्चिबाल्ड ब्लेयर तथा लेफ्टिनेन्ट कोल ब्रुक ने सन् 1778–79 में किया था। अण्डमान द्वीप के सबसे बडे द्वीप का नामकरण इसी लेफ्टिनेन्ट आर्चिबाल्ड ब्लैयर के नाम से किया गया है। यह पार्ट ब्लेयर अण्डमान निकोबार द्वीप की राजधानी भी है। यहाँ जाने के लिये पोटर्टब्लेयर से 12 घंटे लगते हैं तथा स्थानीय प्रशासन से स्वीकृति लेनी पड़ती है। गाइड अनुराधा राव ने बताया कि अण्डमान एवं निकोबार द्वीप समूह में अब भी जारवा, सेन्टिनिलीज, शोम्पेन, ओंगी, अण्डमानीज निकोबारी तथा केरेन नाम की आदिवासी जातियां निवास करती हैं। पोर्टब्लेयर में हिन्दू, ईसाई मुस्लिम, सिक्ख बौद्ध जैन आदि सभी धर्मों के लोग निवास करते है।

रॉस द्वीप के बारे में अनुराधा ने कहा कि यह द्वीप अंग्रेजी शासन के दौरान अण्डमान तथा निकोबार द्वीप समूह की राजधानी था। यहीं पर सभी सरकारी कार्यालय थे। द्वितीय विश्व युद्ध के दौरान यह जापानियों के अधीन भी रहा । महान स्वतंत्रता सेनानी सुभाषचन्द्र बोस ने इसी द्वीप पर सबसे पहले जापानी जरनल से भेंट की थी। जापानियों ने जब यह द्वीप छोड़ा तो उन्होंने इसे तहस–नहस कर दिया।

अब यह रॉस द्वीप खण्डहरों का द्वीप बन कर रह गया है। इस द्वीप पर अंग्रेजी शासनकाल के सभी भवन यथा–सेना बेरेक्स,मुख्य आयुक्त का बंगला, कार्यालय, चर्च बेकरी प्रेस अस्पताल, पानी के टेंक बिजलीघर क्लब कब्रिस्तान जेलर का मकान, स्वीमिंग पुल, बाजार, अंग्रेजी नागरिकों के निवास वाली कई इमारतें जो कभी भव्यता लिये थी, अब खण्डहर के रूप में हैं। अनुराधा ने एक–एक कर उपर्युक्त सभी स्थानों पर ले जाकर हमें उन इमारतों की विशेषताओं का जिक्र किया। जब हम एक के बाद एक इन इमारतों को देख रहे थे तो जगह–जगह हिरनों ने हमारा स्वागत किया। हमारे पास जो कुछ खाने की सामग्री थी, इनके सामने डाली। इनके साथ खडे होकर फोटो खींचे। यह दृश्य हमें आज भी रोमांचित कर देता है। जब इस द्वीप को देखकर वापस बोट में बैठकर रवाना होने लगे तो ताजे–ताजे तोडकर लाये नारियल खरीदे, उनका पानी पीया नारियल की बन रही गिरी को मक्खन की तरह खाने का आनन्द लिया।

रॉस द्वीप से चले तब तक सायंकाल की पाँच बज चुकी थी। सेल्युलर जेल में 5.30 बजे आयोजित ध्वनि और प्रकाश का कार्यक्रम देखना था। सभी बोट से पोर्ट ब्लेयर आये। पास की ही पहाडी पर सेल्युलर जेल थी, बसों से वहाँ पहुँचे। थामस कुक के प्रतिनिधि ने टिकट लेकर हमें निश्चित स्थान पर लगी कुर्सियों पर बैठाया।

मन में सेल्यूलर जेल की कहानी व स्वाधीनता सेनानियों पर हुए अत्याचारों तथा शहीदों की शहादत आदि के बारे में जानने की तीव्र लालसा थी। समय पर कार्यक्रम शुरू हुआ। इस कार्यक्रम के दौरान जो कुछ सुना और देखा वह रोंगटे खड़े कर देने वाला था। इन स्वाधीनता सेनानियों की दृढता राष्ट्रभक्ति एवं गुलामी की बेडियों को तोड फैंकने की जो लगन व निष्ठा उनमें कूट–कूट कर भरी थी। उसे सुनकर देखकर गला भर आया। इस जेल की एक–एक कोटड़ी तथा अत्याचार स्थलों को आँखों से प्रत्यक्ष देखने की इच्छा और तीव्र हो उठी लेकिन इस जेल के कपाट बन्द होने को थे। कार्यक्रम समाप्त होते ही यहाँ से निकलना पडा।

यात्रा के दूसरे दिन पार्ट ब्लेयर शहर के भ्रमण की योजना थी। नेवल मेरिन म्यूजियम (समुद्रिका)

भी देखना था किन्तु इस कार्यक्रम में कुछ परिवर्तन करना स्थानीय कारणें से आवश्यक हो गया। नाश्ते के बाद फिर से बस यात्रा। होटल से सीधे चाथम सॉ मिल पहुँचे। यह समुद्री किनारे पर स्थित एवं जंगल से जुड़ी एशिया की सबसे बडी सॉ मिल है। इस मिल में मूल्यवान लकड़ी से लगाकर साधारण लकड़ी की कटाई आधुनिक मशीनों से होती है। बडे–बडे लकड़ी के लट्ठों की मशीनों से कटाई देखने लायक है। कटी हुई विभिन्न आकार प्रकार एवं लम्बाई–चौड़ाई की लकड़ी रखने के बडे–बडे गोदाम बने हुये हैं। यहाँ एक छोटा सा म्यूजियम भी है। इस म्यूजियम में लकड़ी से बने हुये विभिन्न उपकरण, मूर्तियाँ, आभूषण, दैनिक उपयोग में काम आने वाली आकर्षक वस्तुएँ देखने लायक थी। चित्रों के माध्यम से भी विभिन्न प्रकार की जंगली लकड़ी एवं उनके वृक्षों के स्वरूप आदि को बताया गया था। यहाँ से लकड़ी मकान निर्माण हेतु पूरे अण्डमान द्वीप एवं भारत के विभिन्न प्रान्तों में जाती है। सुनामी के दौरान इस मिल में लगभग 15 से 20 फीट तक पानी भर गया था। बहुत नुकसान हुआ।

चाथम सॉ मिल को देखने के बाद बोट में बैठकर वाईपर द्वीप के लिये चले। इस द्वीप का नामकरण वाईपर सर्वे जहाज के नाम से किया गया है, जो यहाँ पर डूब गया था। रास्ते में समुद्र में चलते हुए दूर से कोरल द्वीप का मनोरम दृश्य भी देखा। इस द्वीप का चित्र भारत सरकार के 20 रूपये के नोट पर भी अंकित है। यह द्वीप रॉस द्वीप जाते समय भी देखा जा सकता है। वाईपर द्वीप में सबसे पहले सन् 1789 में कैदियों को रखने के लिये चेनग्यांग नाम की जेल बनी, जो सेल्यूलर जेल बनने के बाद हटा दी गई। इस द्वीप पर ऐतिहासिक महत्त्व का फांसी घर एक ऊंची पहाडी पर स्थित है। अब यह फाँसी घर जीर्ण शीर्ण अवस्था में है तथा इसकी दीवारों पर वृक्ष व घास फूस उग आई है। इस फाँसी घर में पठान शेरअली को 30 मार्च, 1872 को फांसी पर लटकाया गया था क्योंकि उसने वाईसराय लार्ड मेयो का चाकू से गोद कर 8 फरवरी, 1872ई. को होपटाऊन जेट्टी पर खून कर दिया था। हम सभी ने इस साहसी व क्रान्तिकारी शहीद पठान शेरअली को दो मिनट की श्रद्धांजलि अर्पित कर यहां से पोर्ट ब्लेयर के लिये रवाना हुए।

दोपहर का भोजन पहले ही कर लिया था। अपरान्ह का समय होने आ गया था। थामस कूक के प्रतिनिधि ने चिड़ियाँ टापू चलने का सुझाया। सबको यह विचार पसन्द आया। फिर से बसों में सवार होकर चिड़ियाँ टापू के लिये चले यह टापू पोर्ट ब्लेयर से कोई 30 किमी दूर घने जंगल में स्थित हैं। यहाँ चिड़ियाँ तो देखने को नहीं मिली लेकिन इस द्वीप का अनूठा नैसर्गिक सौन्दर्य देखकर मन प्रसन्न हो गया। साथ ही सुनामी का भयावह कहर भी यहाँ दिखाई दे रहा था। अधिकांश साथियों ने समुद्र में उतर कर समुद्र की लहरों का आनन्द लिया। सूर्यास्त का समय हो गया था। इस टापू पर सूर्यास्त की अलौकिक छटा भी दर्शनीय होती है। इस छटा को बहुतों ने अपने कैमरों में कैद करते हुये पुनः पार्ट ब्लेयर के लिये रवाना हुये। कुछ समय के लिये रास्ते में चाय पीने के लिये दोनों बसें रूकी। पोर्ट ब्लेयर पहुँचते–पहुँचते अंधेरा हो गया था। बसें सीधी होटल पहुंची भोजन के बाद सब निद्रादेवी की गोद में चले गये।

यात्रा का अगला दिन महात्मा गाँधी राष्ट्रीय पार्क वन्डूर के लिये नियत था। यह एक विशाल समुद्री क्रिक पार्क है जो 281.5 वर्ग किलोमीटर और 15 छोटे–छोटे द्वीपों में फैला हुआ है। प्राकृतिक सुंदरता एवं जंगली जीव जन्तुओं से यह द्वीप भरपूर है। इस द्वीप से जुडे जोलीब्वाय द्वीप पर हमें पहुँचना था। पोर्ट ब्लेयर से यह द्वीप 24 किलोमीटर दूर है। बसों द्वारा पोर्ट ब्लेयर से पहले मण्डूर द्वीप पहुंचे। यहाँ से बोट में

बैठकर जोलीब्वाय जाना था। रास्ता लम्बा और गहरा समुद्र होने से हम सबको बोट में बैठने से पहले सुरक्षा जॉकेट पहनाये गये।

बोट रवाना हुए। चारों और गहरा समुद्र! काँच के सदृश स्वच्छ एवं नीलिमा लिये पानी। पानी में कहीं भी मछली तक नजर नहीं आती थी। पाँच छः किलोमीटर आगे बढने पर समुद्री गलियारा आया। दोनों ओर टापू। दोनों टापूओं के बीच में 200 से 250 फीट की दूरी। दोनों ओर के टापू हरियाली से भरपूर। टापूओं का किनारा समुद्री लहरों से कटा हुआ। यह कटी हुई भूमि विभिन्न आकर्षक डिजाइनों से मनमोहक। इन टापूओं के घने जंगल में ऊँचे–ऊँचे गगन चुम्बी पेड, लेकिन कहीं पर कोई बन्दर या जंगली जानवर दिखाई नहीं दिया। पक्षी भी नहीं दिखे, न पक्षियों का कलरव ही सुनाई दिया।

कोई दो घंटे बोट से चलने के बाद 'जोलीब्याय' टापू पर पहुंचे सुनसान और हरियाली से भरपूर टापू। समुद्र बहुत कम गहरा। सब ने यहाँ बैठकर पहले समुद्री लहरों का आनन्द लिया। जब रहा नहीं गया तो कुछ साथी व महिलायें साहस कर समुद्र के पानी में पैदल आगे बढे। कुछ साथी समुद्र में तैरने लगे। सुरक्षा जॉकेट पहन कर कुछ बहुत दूर भी चले गये। फोटोग्राफी का आनन्द भी लिया। इस द्वीप पर एक सुरक्षा कर्मी भी नियत था। यह हमें समय–समय पर सतर्क रहने के लिये कहता रहता। यहाँ गन्दगी नहीं फैलाने और नाश्ता करने के बाद खाली प्लास्टिक की थैलियाँ, डिब्बे आदि नहीं छोड़कर जाने की चेतावनी लगातार देता रहता। यहाँ से समुद्री जीव–जन्तुओं के जो अवशेष सीपी पाषाण के आकर्षक नमूने बिखरे पड़े हुये हैं, उन्हें यहाँ से एकत्रित कर नहीं ले जाने के लिये भी सुरक्षाकर्मी सतर्क कर रहा था और कानूनी पाबन्दी की बात बता रहा था। दोपहर में उमड़–धुमड़ कर बादलों ने द्वीप पर डेरा डाला। वर्षा भी आई झाडियों में छिप कर वर्षा का यह लुत्फ भी उठाया। दोपहर बाद वापस रवाना हुए। बोट में लगे विशेष काँच के माध्यम से समुद्र के अन्दर के जीवों की चहल कदमी का भी अवलोकन किया।

बोट से पुनः मण्डूर द्वीप पर पहुँचे। उतर कर मण्डूर द्वीप के दूसरे छोर के समुद्री किनारे पर बैठकर साथ में लाये डिब्बा बन्द भोजन सबने मिलकर किया। यहाँ पर स्थानीय निवासियों ने नारियल की दुकाने लगा रखी थी। पीले और हरे रंग के नारियल। पसन्द के अनुसार खरीद कर नारियल से तृप्त होने का प्रयास भी किया। वर्षा ने यहाँ भी दस्तक दी। भीगने का आनन्द भी लिया। अन्त में, भोजन के पश्चात् पुनः पोर्ट ब्लेयर के लिये बसों से रवाना हुए। बसें सीधी पोर्ट ब्लेयर के मुख्य बाजार में स्थित सागरिका के पास रूकी। यहाँ पर प्रायः सभी ने कुछ न कुछ खरीददारी अवश्य की। किसी ने समुद्री मोती खरीदे तो किसी ने मोती व मूंगा जडित आभूषण खरीदे। कुछ ने समुद्री जन्तुओं के आकर्षक अवशेष लिये तो कुछ ने यहाँ की लकडी से बने सजावट तथा रसोई में काम आने वाले उपकरण खरीदे।

यात्रा के अंतिम दिवस प्रातः हमेशा से जल्दी उठना पड़ा। नित्य कर्म से निवृत्त हो होटल TSG से चेक आउट करने के लिये सामान को पैक किया। मन में नैसर्गिक सौन्दर्य से परिपूर्ण ऐतिहासिक किन्तु काला पानी के नाम से ख्यात इस अण्डमान द्वीप से विदाई लेने की उदासी व्याप्त थी तो दूसरी ओर एअरपोर्ट पहुँचने से पहले शहीदों के राष्ट्रीय स्मारक सेल्यूलर जेल पहुँच कर उसे निहारने की उत्सुकता और उमंग से मन सराबोर था।

अभी प्रातः 7.30 बजे थे, पहुंचना 9.00 बजे था। इस बीच ब्रेकफास्ट भी लेना था, लेकिन एक–एक

पल एक–एक घंटे जैसा प्रतीत हो रहा था। नाश्ता तो करना ही था क्योंकि पता नहीं दिन में भोजन कब नसीब हो?लकिन आज इस नाश्ते में हमेशा की तरह स्वाद नहीं था। मन में सेल्यूलर जेल देखने के जो सपने संजो रखे थे, वे अभी कुछ क्षणों बाद पूरे होने वाले थे, इसलिये ब्रेक फास्ट गौण हो गया था। जैसे तैसे नाश्ता कर बसों में सामान साथ में लेकर सेल्यूलर जेल ठीक 9.00 बजे पहुंचे। थामस कुक के प्रतिनिधि ने हमारे लिये टिकट खरीदे, गाइड किया और हमारे दल ने सेल्यूलर जेल में प्रवेश किया। हमें जेल होकर भी जेल नहीं लग रही थी। हमारे लिये यह स्वतंत्रता सेनानियों का परम पावन मंदिर था। इस मंदिर में घुसते ही यहाँ की चन्दन सी माटी का वन्दन कर उसे माथे पर लगाया।

गाइड ने हमें बताना शुरू किया। यह सेल्यूलर जेल इण्डियन बेस्टिल के नाम से दुनिया भर में ख्याति प्राप्त है। यह जेल पोर्ट ब्लेयर नगर के अटलांटा पोइंट की ऊँचाई पर स्थित है जो इस नगर के उत्तर–पूर्व दिशा में है। इस जेल के निर्माण की सिफारिश जेल निर्माण कमेटी के सदस्य सर सी जे लायल एवं सर ए एस लैथ ब्रिज ने सन् 1890 में की तथा इसके निर्माण का आदेश पोर्ट ब्लेयर के तत्कालीन सुपरिन्टेडेन्ट कर्नल एन एम टी हार्सफोर्ड ने प्रसारित किये। इस जेल का निर्माण सन् 1896 से 1906 ई. के मध्य हुआ तथा इस के निर्माण में कुल 5,17,352/– रूपये व्यय हुए। इस जेल की सात भुजायें (कतारें) हैं यह सातों ही कतारें मध्य भाग में एक टावर से जुडी हैं। इस मध्य भाग के टावर से जेल की इन सातों भुजाओं पर एक साथ नजर रखी जा सकती है। प्रत्येक भुजा तीन मंजिला है जिसमें 696 कोटड़ियां (कमरे) हैं। वर्तमान में इस जेल में तीन भुजायें (कमरे) तथा कुल 291 कोटड़ियाँ ही विद्यमान है। शेष चार भुजायें एवं 405 कोटड़ियाँ भूकम्प तथा द्वितीय विश्व युद्ध के दौरान जापानियों द्वारा (1942–45 के मध्य) की गई बम वर्षा के कारण नष्ट हो गई। इस स्थान पर अब सरकारी अस्पताल है। इन कोटडियों की बनावट अपने आप में एकान्त जेल सदृश है। एकान्त जेल सदृश्य होने के कारण इस सम्पूर्ण जेल का नामकरण सेल्यूलर जेल किया गया है। प्रत्येक कोटड़ी 13.5 फीट लम्बी और 7 फीट चौड़ी है। कोटड़ी में काफी ऊंचाई पर 3X1 का केवल एक रोशनदान दिया गया है। हवा और रोशनी के लिये एकमात्र यही रोशनदान है। कोटड़ी के बाहर क्या हो रहा है कुछ भी पता नहीं चलता है। कोटड़ी का दरवाजा लौह का है जो तीन फीट की राड के साथ बाहर से बन्द होता है तथा ताला भी बाहर ही लगता है। सभी कोटड़ियाँ लम्बी कतार में है, कोटड़ियों के बाहर चार फीट चौडा दालान है। दालान में रात की रोशनी हेतु लालटेन टंगे हुए हैं। जेल की एक कतार तीन मंजिल होने से हर मंजिल में उस समय एक वार्डन रहता था। इस प्रकार सातों भुजाओं में 21 वार्डन गश्त लगाते थे।

इन कोटड़ियों में लघु या दीर्घशंका (शौच) के निवारण के लिये कोई स्थान नहीं था। रात्रि में लघुशंका के लिये मिट्टी का एक बर्तन दिया जाता था। उसमें एक बार का मूत्र समा सके यह उतना ही बडा होता था, दो तीन बार करना पडे तो वहीं कोटड़ी में करना पडता था। रात को पेट गडबड हो जावे फ्रेश होने की इच्छा हो या दस्तें लग रही हैं तो रात को इसके लिये कोटड़ी से बाहर आने की कोई सुविधा उपलब्ध नहीं होती थी। यह कोटड़ी ही इन स्वतंत्रता सेनानियों का शयन कक्ष था, यही ड्राईग रूम और यही शौचालय। रात को लघुशंका या शौच हो जाने पर कोटडी दुर्गन्ध से भर उठती थी। शौच आने की स्थिति में वार्डन भी बहुत सख्ती से पेश आते थे। बिना उनकी स्वीकृति से कोई कोटडी से बाहर नहीं आ सकता था। बीमार होने पर सख्ती से जाँच होती थी। खूंखार जेलर मिस्टर बेरी के पास उपस्थित होना होता था। बेरी की

स्वीकृति के बाद ही डाक्टरी जाँच हो सकती थी।

स्वतंत्रता सेनानियों को प्रतिदिन नारियल या सरसों का तेल निकालने का कोटा अनिवार्य रूप से पूरा करना होता था,जो स्वाधीनता सेनानी ऐसा नहीं कर पाते थे, उन्हें एक स्टेण्ड से बांध कर बेरहमी के साथ पीटा जाता था। तेल निकालने की घाणी में बेल की तरह जुतना होता था और कोल्हू को खींचना होता था। बीमार क्रान्तिकारी को भी इससे छूट नहीं थी। तेल निकालने के अलावा इन क्रान्तिकारियों को नारियल के छिलके को कूट—कूट कर साफ करना होता था।

गाइड ने बताया कि इन क्रान्तिकारियों को जो भोजन दिया जाता था, वह स्वादहीन होता था, रोटियां कच्ची अथवा जली हुई होती थी। दाल या सब्जी नीरस घास के तिनकों कीडों से युक्त तथा कम नमक वाली होती थी। लेकिन भूख मिटाने के लिये इसे खाना होता था। इस भोजन से क्रान्तिकारी अक्सर बीमार हो जाते थे।

इन क्रान्तिकारियों को सायंकाल 5.00 बजे से ही कोटड़ियों में बन्द कर दिया जाता था और प्रातः 6.00 बजे तक बन्द रहना पडता था। इन क्रान्तिकारियों को समाचार पत्र पढने की सख्त मनाही थी। अपने घर पर वर्ष में एक बार ही पत्र लिख सकते थें। जो पत्र आते उनकी भी कडाई से जांच के बाद ही दिया जाता था। कभी कभी रोक भी दिया जाता था। कभी—कभी क्रान्तिकारी भूख हडताल कर देते थे और जिन क्रान्तिकारियों ने जेल के जुल्म का मुकाबला करने की कोशिश की तो उन्हें जान भी गँवानी पडती थी। इन्दुभूषण राय का आत्म—बलिदान इसका उदाहरण है। जेल का अनुशासन बहुत कड़ा था।

जेल के गाईड ने इस प्रकार की कई जानकारियाँ दी। उसने सेल्यूलर जेल के चप्पे—चप्पे का अवलोकन कराने से पूर्व इस जेल के मध्य में स्थित बलिदान वेदी स्तंभ तथा 9 अगस्त 2004 से स्थापित स्वातंत्र्य ज्योति के दर्शन कराये। तत्पश्चात उसने इस जेल परिसर में स्थित विशिष्ट स्थान विशेषकर फांसी घर तेल कारखाना सजा देने का स्टेण्ड एवं सजा देने के प्रकार स्वतंत्रता सेनानियों की चित्र दीर्घा, नेताजी दीर्घा, आर्टी फैक्ट दीर्घा, अण्डमान चित्र दीर्घा, मध्य का टावर, वीर सावरकर की कोटड़ी आदि को एक—एक कर के देखा। फाँसी घर सेल्यूलर जेल के ग्राउण्ड फ्लोर पर बना हुआ था। यह फांसी घर अंग्रजों की क्रूरता का आज भी साक्षी है। इसके अन्दर जाकर देखा तो रोंगटे खडे हो गये। किस प्रकार क्रान्तिकारी को ऊपर खड़ाकर नीचे से पाटिया खिसका दिया जाता और शव घड़ाम से अण्डर ग्राउण्ड में जा कर गिर जाता। इस दृश्य को देखकर ऐसे क्रान्तिकारियों के प्रति हमारे सिर श्रद्धा से स्वतः ही झुक गये। ग्राउण्ड फ्लोर पर ही बना तेल निकालने का कारखाना, तेल की घाणी भी स्थित है। क्रान्तिकारियों को इस घाणी के कोल्हू से जोड़ कर उनसे कोल्हू चलवाया जाता और पास की कुर्सी पर बैठा व्यक्ति थोड़ी सी भी गति धीमी करने पर किस प्रकार से कोडे मारता, यह देख कर हमारे रोंगटे खडे हो गये। इसी प्रकार सजा देने के स्टेण्ड व सजा देने के प्रकारों को भी देखा, जिस क्रान्तिकारी को सजा देनी होती उसे इस स्टेण्ड पर उल्टा बाँध दिया जाता तथा एक तगडा व्यक्ति लगातार उसकी पीठ व पैरों पर कोड़े से वार करता और हर कोड़े पर क्रान्तिकारी जोर—जोर से वन्देमातरम् का उद्घोष तब तक करता रहता जब तक वह बेहोश नहीं हो जाता। सजा देने के ऐसे और भी कई तरीके चित्र बना कर यहाँ बताये गये हैं।

स्वतंत्रता सेनानियों की चित्र दीर्घा में उन अधिकांश क्रान्तिकारियों के चित्र जो उपलब्ध हो सके

उनके चित्र नाम व परिचय के साथ लगाये गये हैं कई ऐसे क्रान्तिकारी भी हैं जो इस जेल में अपना जीवन बलिदान कर चुके हैं जिनके नाम, पता व फोटो तक इस चित्र दीर्घा में उपलब्ध नहीं हो सके हैं क्योंकि रेकार्ड में उनका नाम तक दर्ज नहीं है। इस चित्र दीर्घा में इन क्रान्तिकारियों को उस समय पहनाई जाने वाली ड्रेस, उनको लगाई जाने वाली विभिन्न प्रकार की बेडियाँ, उनके खाने के बर्तन आदि को भी प्रस्तुत किया गया है।

सेल्यूलर जेल के क्रूर खूंखार एवं अत्याचारी जेलर डेविड बेरी के कार्यालय में नेताजी सुभाषचन्द्र बोस से संबंधित चित्र दीर्घा को रूपापित किया गया है। द्वितीय विश्वयुद्ध के दौरान और अण्डमान निकोबार द्वीप पर जापानीसेना के अधिकार के समय 29,30 एवं 31 दिसम्बर, 1943 को तीन दिवसीय दौरे पर नेताजी सुषाषचन्द्र बोस अण्डमान निकोबार द्वीप पर आये थे। इस समय उन्होंने सेल्यूलर जेल, रॉस द्वीप, पोर्ट ब्लेयर आदि द्वीपों का दौरा किया था तथा 30 दिसम्बर 1943 ई को पोर्ट ब्लेयर के जिमखाना मैदान में आजाद हिन्द सरकार का झण्डा फहराते हुये अपने भाषण में अण्डमान को शहीद द्वीप तथा निकोबार का स्वराज्य द्वीप नामकरण किया था। नेताजी के इस स्वर्णिम प्रवास तथा उनके सम्पूर्ण जीवन की चित्र विथी का पूर्ण विवरण के साथ इस दीर्घा में प्रभावी तरीके से सजाया गया है।

सेल्यूलर जेल के ग्राउण्ड फ्लोर के कुछ अन्य सामान्य स्थानों का परिचय कराते हुये गाइड महोदय हमारे दल को सेल्यूलर जेल को उस कोटडी में ले गये, जहाँ पर विनायक दामोदर सावरकर को बन्दी बना कर रखा गया था। इस कोटडी में रहते हुये विनायक दामोदर सावरकर को एक वर्ष तक यह पता नहीं चल सका कि उनका बडा भाई गणेश दामोदर सावरकर भी इसी जेल में कैद है। इस कोटडी में वीर सावरकर 4 जुलाई 1911 से 22 जनवरी, 1921 तक बन्द रहे। यह कोटडी सेल्यूलर जेल की तीसरी मंजिल के अन्त में वाटर स्पोर्टस परिसर की ओर स्थित भुजा (कतार) पर स्थित है। वीर सावरकर से ब्रिटिश सरकार बहुत भयभीत थी और डर था कि कहीं इस कोटडी से सावरकर बाहर नहीं निकल जाये, इस कारण इस कोटड़ी के बाहर एक और कोटड़ी बनाकर डबल लोक में उन्हें रखा गया था। मूल कोटडी में दरवाजे के ठीक सामने वीर सावरकर का चित्र टंगा हुआ था। इस कोटडी को देखने की बचपन से लालसा थी वह आज पूरी हुई बहुत देर तक इस कोटडी को निहारता रहा और सोचता रहा कि जिस कोटडी में वीर सावरकर बन्दी थे, उसी कोटड़ी में आज मैं भी हूँ। यह सोचते हुये इस कोटड़ी की दीवारों को चूमता रहा तथा सावरकरजी के चित्र के नीचे खडे होकर फोटो खींचवाया ताकि इस फोटो के साथ इस कोटड़ी को भविष्य में भी निहारता रह सकूँ। इच्छा थी इस कोटडी में घंटों बैठा रहूँ किन्तु समय की सीमा थी, एअरपोर्ट पहुँचना था। अन्य साथी आगे चले गये थे। मुझे भी विवश हो उनके पीछे होना पड़ा। यहाँ से जेल के मध्य स्थित टावर में ले जाया गया, जहाँ से सम्पूर्ण जेल पर कैसे नियंत्रण रखा जाता था वह दृश्य बताया। इस टावर से रॉस द्वीप स्पष्ट दिखाई देता था। यहाँ लगे शिलापट्ट पर उन क्रान्तिकारियों के नाम भी उत्कीर्ण थे, जिन्होंने यहाँ रहकर यातनाएं सही थी। ऐसी सेल्यूलर जेल को 11 फरवरी 1979 ई को तत्कालीन प्रधानमंत्री मोरारजी देसाई ने राष्ट्रीय स्मारक घोषित कर भारत भू को समर्पित किया ताकि इस प्रेरणा स्थल एवं शहीदों के मंदिर को चिर स्मृतियों में संजोकर रख सके।

समय जवाब दे रहा था, जल्दी जल्दी नीचे उतरे। जेल परिसर से बाहर आये। बाहर

सावरकर पार्क में सावरकरजी के साथ उन 6 क्रान्तिकारियों की आदमकद मूर्तियां स्थापित की गई थी जिन्होंने इस जेल में अपनी अंतिम सांसें ली थी। ये क्रान्तिकारी शहीद थे–इन्दू भूषण रे, बाबा भानसिंह, मोहित मोइत्रा, रामरक्श, महावीरसिंह और मोहनकिशाोर नामादास। इन शहीदों को नमन कर पुनः बस में सवार होकर वीर सावरकर एअरपोर्ट पहुंचें। लगभग 11.55 पर वायुयान चेन्नई के लिये उडा और ठीक दो बजे चेन्नई एअरपोर्ट पर उतरे। इस तरह अण्डमान द्वीप की यह चिरस्मरणीय एवं अद्वितीय यात्रा कई संस्मरणों को मन में संजोये हुए सम्पन्न हुई।

इस अद्वितीय यात्रा में यह अनुमान हुआ कि पोर्ट ब्लेयर में लघु भारत के दर्शन होते हैं। हिन्दी यहाँ पर घड़ल्ले से बोली जाती है तथा यहाँ के निवासियों में आज भी वीर सावरकर तथा नेताजी सुभाष बोस के प्रति पर्याप्त आदर भाव है। सेल्यूलर जेल, रॉस द्वीप, वाईपर द्वीप आदि को स्वाधीनता मंदिर के रूप में श्रद्धा के साथ स्मरण करते हैं। ऐसा आत्मीय मंदिर काला पानी कैसे हो सकता है?मैंने सोचा कि इसे काला पानी कहे भी क्यो?जिस धरती पर हमारे स्वाधीनता सेनानियों ने माँ भारती को दासता से मुक्त कराने के लिये अपना सर्वस्व न्योछावर कर दिया वह भूमि तो पावन पुष्प चढाने के लिये है। इस धरती की वन्दना करने की बार–बार इच्छा रखते हुये पुनः नमन किया।

शब्दार्थ

धरोहर – विरासत	नैसर्गिक – प्राकृतिक
भयावह – डरावना	पाषाण – पत्थर
निहारना – देखना	ख्याति – प्रसिद्धि
क्रूरता – दुष्टता	सर्वस्व – सबकुछ

अभ्यास प्रश्न

वस्तुनिष्ठ प्रश्न

1. इण्डियन बेस्टिल के नाम से प्रसिद्ध है–

   (क) रॉस द्वीप (ख) सेल्यूलर जेल

   (ग) पोर्ट ब्लेयर (घ) वाईपर द्वीप

2. सेल्यूलर जेल में किस स्वतंत्रता सेनानी ने यातनाएँ सही?

   (क) वीर सावरकर (ख) भगत सिंह

   (ग) महात्मा गांधी (घ) गोपाल कृष्ण गोखले

अतिलघूत्तरात्मक प्रश्न

1. अण्डमान निकोबार द्वीप समूह का क्षेत्रफल बताइये?

2. कौनसा द्वीप खण्डहरों का द्वीप बनकर रह गया है?

3. किस द्वीप का चित्र भारत सरकार के बीस रूपये के नोट पर अंकित किया गया है?

4. सेल्यूलर जेल की कोटड़ियों की बनावट कैसी है?

लघूत्तरात्मक प्रश्न

1. रॉस द्वीप के बारे में गाइड ने क्या बताया?

2. चॉथम सॉ मिल की क्या विशेषताएं है?

3. पठान शेर अली को फाँसी क्यों दी गई ?

4. सेल्यूलर जेल को लेखक ने पावन मंदिर क्यों कहा है?

निबन्धात्मक प्रश्न

1. सेल्यूलर जेल में स्वतंत्रता सेनानियों पर किए गऐ अत्याचारों का वर्णन अपने शब्दों में कीजिये।

2. रॉस द्वीप और वाईपर द्वीप की ऐतिहासिकता का संक्षेप में वर्णन कीजिए।